लाल दरवाजे की हवेली में, श्री राजें किया हुकुम ।
लाल गोवरधन को कह्या, जाए मुल्ला पूछो तुम ॥१॥

तब श्री जी ने लाल दरवाजे की हवेली में लालदास जी तथा गोवर्धन जी को हुक्म दिया कि तुम दोनों मुल्ला के पास जाकर कुरान की हकीकत को देखो ।

क्या कुरान में कहत हैं, कैसी हैं मजकूर ।
किनको ए ठहरावत, सो मुझ आगे करो जहूर ॥२॥

महमंद साहब ने कुरान में क्या कहा है तथा कयामत के विषय में क्या बातें लिखी हैं यह लोग ईमाम मेंहदी किसको मानते हैं या उनके आने की बात को स्वीकार करते हैं या नही, यह बातें मुझे आकर बताओ।

इन समय काम करन की, उरझ रही सब बात ।
कैसे कर पहिचानेगा, अपनी असल जात ॥३॥

इस समय औरंगजेब तक ईमाम मेंहदी के आने की पहचान देने की सारी बात अटकी पड़ी थी । किस तरह से उसको पहचान हो कि मैं साकुमार बाई की वासना हूं तथा मेरा घर अखंड परमधाम है ।

लाल गोवरधन गए, एक मुल्ला पास मेहेजद ।
बातें सुनत मुल्लां की, आपुस में भई जिद ॥४॥

श्री लाल दास तथा गोवर्धन दास दोनों मिलकर एक मुल्ला के पास मस्जिद में गए । मुल्ला द्वारा बताई परमधाम की सब बातें तथा कयामत के सातों निशानों की बातें सुनकर आपस में वाद-विवाद हो गया।

मुल्ला के बातन की, लालें भई पहचान ।
एतो हमारे घर की, तहकीक भया ईमान ॥५॥

मुल्ला ने जो कुछ भी बताया उससे लाल दास जी को यह पहचान हो गई कि कुरान में हमारे घर की हकीकत है तथा उन्हें कुरान पर ईमान आ गया ।

गोवरधन के दिल में, डर रहे मुसलमान ।
पोहोरा औरंगजेब का, जिन कोई सुने कान ॥६॥

गोवर्धन दास जी अभी वजूद के पर्दे से बाहर नही हो पाये थे । इसीलिए अपने को हिन्दू मानने के कारण उन्हें मुसलमानों से भय लगा रहता था कि औरंगजेब का राज्य है । यदि किसी मुसलमान को पता चलेगा कि यह कुरान पढ़ते हैं तो मरवा डालेंगे ।

Nijanand App

तिस वास्ते झगड़ा भया, लाल बातें करें मिने जोस ।
टूक टूक होवे इन बात पर, दुनियां थी फरामोस ॥७॥

इसलिए गोवर्धन दास जी लालदास जी से लड़ पड़े और लालदास जी जोश में आकर बातें करने लगे कि बेशक कयामत आ गई है और श्री प्राणनाथ जी ही आखरूल जमां ईमाम मेंहदी हैं जिनकी खबर दुनियां को नही है ।

दोऊ राह में लड़के, आये लाल दरवाजे सोय ।
राज आरोगन को समै, दिन रह्या घड़ी दोय ॥८॥

दोनों आपस में वाद-विवाद करते हुए लाल दरवाजे आ पहुंचे । गोवर्धन दास जी कह रहे थे कि यह बातें श्री जी से न कहना, नही तो वो मरवा डालेंगे । लालदास जी कह रहे थे कि हमें धनी के फुरमान पर मर मिटना है हमें मरने का डर नही है । सन्ध्या समय श्री जी के आरोगने का समय हो चुका था । दो घड़ी दिन बाकी था ।

ऊंचे अटारी पर, बैठे हते श्री राज ।
गोवरधन तहां पहुंच के, कही सुनी चरचा जो आज ॥९॥

आप श्री जी ऊपर अटारी में बैठे थे । गोवर्धन दास जी श्री जी के सामने सच्चे होने के लिए पहले आ गए तथा कुरान की जो हकीकत सुनी थी सब कह डाली ।

इतनी बेर में तित-हिं, लालदास आए पहुंचे ।
बातें सुनी तिन की, कही गोवरधन जे ॥१०॥

इतनी देर में लालदास जी भी आ गए । गोवर्धन दास जी जो श्री जी को बता रहे थे वह सब कुछ लालदास ने सुन लिया ।

वहां की बातें सुनके, कहने लगा जब ।
ए जो लालदास नें, अरज करी तब सब ॥११॥

लालदास जी ने देखा कि गोवर्धन दास तो कुरान की सुनी हुई हकीकत ज्यों की त्यों कह रहा है और उधर उसने मेरे सामने बेईमानी की बातें की, क्या इसी को मोमिन कहते हैं ? तब श्री लालदास जी ने श्री जी के सन्मुख गोवर्धन दास जी की दुष्टाई की सारी बात कह सुनाई ।

हमारा इन चटाई पर, मन होत है और ।
इहाँ सेती उठ जात हैं, तब चेहेन न रहवे ठौर ॥१२॥

श्री लालदास जी श्री जी से कहते हैं कि हे धनी ! हमारा ईमान आपके सामने केवल चटाई पर ही रहता है । जब हम आपके चरणों से दूर हो जाते हैं तो हमें आपकी सारी पहचान भूल जाती है तथा हम आप को केवल एक साधारण मनुष्य ही समझने लगते हैं ।

Nijanand App

तब भाई गोवरधन को, रीस चढ़ी बनाए ।
ऐ सब मोकों कहया, तुम जानत नाहीं ताए ॥१३॥

तब गोवर्धन दास जी श्री लालदास जी पर चिढ़ गये और उसको गुस्सा आ गया कि ये जो कुछ कह रहे हैं मुझको ही कह रहे हैं और वे श्री जी से कहने लगे कि हे धनी ! ये मुझे ही कह रहे हैं, क्या आप इस बात को जानते नही हैं ?

दोउ बातां श्री राज देख के, दिल में किया विचार ।
इनों की अकल ऊपर, मोहे कैसो इतबार ॥१४॥

इन दोनों की जुदा-जुदा बातें देखकर श्री जी ने दिल में विचार किया कि ऐसी दो तरफी बातें करने वालों की अकल पर मैं क्या भरोसा करके जागनी करूंगा ।

इन समै श्री राज को, नूर जोस चढ़ियो जोर ।
आए जबराइलें जोरा किया, असराफीलें किया सोर ॥१५॥

इन दोनों की बातें सुनकर श्री जी को बहुत जोश आ गया । जबराईल और असराफील अपने आवेश में आ गये अर्थात् उन्हें अत्याधिक शारीरिक क्रोध आ गया ।

मोंह आगे बिजलीय के, चमकत लेहेरां दई ।
तब श्री राज के मुख से, ए बातां पुकार कही ॥१६॥

श्री जी इतने जोश एवं आवेश में आ गये कि उनका चेहरा बिजली की तरह चमकने लगा । तब ऐसी दशा में उनके मुखारविन्द से जोश भरे शब्द निकले तथा उन्होंने पुकार कर कहा ।

कारखाना कागद का, ए सौंप्या लालदास ।
उदयपुर को जावहीं, भीम मुकन्द मोमिन खास ॥१७॥

लालदास जी ! उठा लो सब किताबें । मुझे जागनी का कोई भी काम नहीं करना है । भीम भाई तथा मुकुन्द दास को उदयपुर जाने का हुकम दे दिया ।

गोवरधन भट्ट को कहया, सूरत जाओ तुम ।
अनूप सहर हम जात हैं, एह हुआ हुकम ॥१८॥

गोवर्धन दास को सूरत में जाकर सुन्दरसाथ की सेवा करने का आदेश दिया । उनको ऐसा हुकम देकर उन्होंने कहा कि अब मुझे कोई भी जागनी का कार्य नहीं करना है । हम अनूपशहर जाते हैं ।

Nijanand App

दई वस्तां जोस में, सेख बदल को हुकम ।
कागद लालदास को, मुकन्ददास तारतम ॥१९॥

जाहिरी वस्तुएं बांटने के बाद श्री जी ने कहा कि मुझसे अब और क्या चाहते हो ? धनी ने मुझे जो दिया है वह मैं देता हूं । शेखबदल को हुकम की शक्ति बख्शीश की । कुल कागज अर्थात् शास्त्र, पुराण और कुरान की बख्शीश श्री लालदास जी को कर दी । मुकुन्द दास जी को तारतम से जागनी करने का हुकम दे दिया और कहा कि लोगों को गीता भागवत सुनाकर जागनी करो ।

बुध दई भीम को, गोवरधन को सूरत ।
मुकुन्द भीम उदयपुर, हम जात अनूपसहर इत ॥२०॥

भीमभाई को जागृत बुद्धि दी । गोवर्धन दास जी को गद्दी संभालने के लिए सूरत भेज दिया । मुकुन्द दास जी और भीम भाई को उदयपुर जाने के लिए हुकम दिया तथा कहा कि मैं अब अनूपशहर जाता हूं । मुझे कोई भी जागनी नही करनी है ।

भागी सारी उरझन, कोई न रह्या काम ।
प्रात को उठ ले चले, अनूप सहर के टाम ॥२१॥

जागनी की सारी उलझन ही खत्म हो गई (कोई जागनी का झंझट ही नही रहा) । अब श्री जी के सामने कोई कार्य था ही नही । इसलिये दूसरे दिन सवेरे प्रातः उठकर अनूपशहर चलने के लिए श्री जी तैयार हो गए ।

महिना था आसाढ़ का, बरखत धारा अखण्ड ।
पोठी ऊपर बैठ के, पहुंचे अनूप सहर तत खिन ॥२२॥

आषाढ़ का महीना था । मूसलाधार वर्षा हो रही थी । अनूपशहर तुरन्त पहुंचने के लिए वे ऊंट गाड़ी पर बैठ गये ।

मारग मिने चलते, दई मानिक औखद ।
पेट छूटा तहां जाए के, कछु न रही हद ॥२३॥

दिल्ली से अनूपशहर चलते समय अधिक जोश और आवेश के कारण श्री जी को दस्त आने लगे तथा सीमा से बाहर जब पेट से पानी निकलने लगा तब मानिक भाई जी ने कुछ दवाई दी ।

इन समय सरीर को, बड़ी भई कसोट ।
डर के लालबाई रोई, ले धनी की ओट ॥२४॥

इस समय उनके शरीर पर बहुत बड़ी कसौटी आ गयी । ऐसा लगता था कि शरीर ही छूट जायेगा। ऐसी दशा को देख कर लालबाई डर गई और श्री जी के चरण पकड़ कर रोने लगी ।

Nijanand App

तब आप दिलासा करी, जिन कोई डरो तुम ।
फिरी न मेरी सुरत, तब तुम्हें खबर करों हुकम ॥२५॥

तब आप श्री जी ने दिलासा देते हुए कहा कि तुम डरो नहीं । अभी मेरे धाम चलने का समय नहीं आया है । जब वह समय आयेगा तो मैं आपको खबर कर दूंगा ।

उस बखत जबराईलें, बड़ा जो किया जोर ।
उतरे कलाम कादर से, करो खेल में सोर ॥२६॥

ऐसी हालत में श्री राजजी के हुकम से जबराईल आया और बहुत आवेश आने पर वहां सनन्ध की वाणी उतरी । श्री राज जी अपनी पूर्ण शक्तियों सहित विराजमान हो गये और कहा कि अब हिन्दू और मुसलमान दोनों को मेरे स्वरूप की पहचान करा कर जागनी का काम करो ।

तौरेत किताब में, उतरी सनंधे तीस ।
सब खबर कुरान की, हकें करी बकसीस ॥२७॥

तब कलस किताब के ११ प्रकरणों के अतिरिक्त संनध के ३० प्रकरण और उतरे । इन ३० प्रकरणों में कुरान की सारी हकीकत है, जो आप श्री राजजी महाराज ने सुन्दरसाथ के वास्ते बख्शीश की ।

सनंधे लिख तैयार करी, विचार देखे सुकन ।
ऐह बानी सुनके, पीछा न हटे मोमिन ॥२८॥

श्री लालदास जी ने उस वाणी को लेकर लिखा और ग्रन्थ रूप में तैयार किया । बाद में श्री जी ने उसे देखा और कहा कि इस वाणी को पढ़ कर मोमिनों का ईमान कभी भी गिरेगा नहीं ।

इन मजल ऐसा हुआ, सब कारज भये सिध ।
अपने निज वतन की, आई जागृत बुध ॥२९॥

दिल्ली से अनूपशहर जाते समय श्री राजजी महाराज की ऐसी कृपा सुन्दरसाथ पर हुई कि बिगड़ते हुए सारे काम सिद्ध हो गए और श्री जी के हृदय में परमधाम की निज बुद्धि ने प्रवेश किया, जिससे यह सनन्ध ग्रन्थ उतरा ।

अब ए बानी सुनके, कोई न फिरे ईमान ।
जब पहुंचे सकुमार को, टूक टूक होवे सुलतान ॥३०॥

तब श्री जी ने कहा कि अब इस वाणी को सुनकर परमधाम की कोई भी ब्रह्मसृष्टि ईमान से पीछे नही हटेगी । जब यह वाणी साकुमार (औरंगजेब) को मिल जायेगी तो वह भी ईमाम मेहंदी के कदमों पर फना हो जाएगा ।

Nijanand App

इन बखत पाटक के, कछु दिल में भई सक ।
देखी अन्दर विचार के, कैसी बात माफक ॥३१॥

श्री जी अनूपशहर में पाटक की हवेली में ठहरे हुए थे । जब उसने सनन्ध की वाणी को सुना तो उसे कुछ शक आ गया और मन ही मन में विचार करने लगा कि हिन्दू होकर ये अपने आपको ईमाम मेंहदी कहते हैं । यह बात कहां तक सच हो सकती है ?

पधराए अपने घरों, बिछौने कर साज ।
बातें राजें सब करीं, बीतक अपनी तहाँज ॥३२॥

तब उस पाटक ने श्री जी को अपने घर पधराया तथा खूब आदर के साथ आसन पर बैठाया । वहां पर श्री जी ने अपने स्वरूप की पहचान करायी कि मैं ही श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार हूं तथा मैं ही कुरान के हिसाब से आखरूल जमां ईमाम मेंहदी हूं ।

तब एह सुन के, बहुत हुआ खुसाल ।
अरज अपनी करने लगा, माफक अपने हाल ॥३३॥

इस बात को सुनकर पाटक बहुत खुश हुआ तथा उसने श्री जी के चरणों में प्रार्थना की कि हे धनी! मेरी आतम को जगाकर भवसागर से पार कीजिये ।

इहाँ सेती आये के, साथ को दिया दीदार ।
तुमको सैंया हुकम, जो भेजा परवरदिगार ॥३४॥

पाटक के घर से स्वामी जी वापस सुन्दरसाथ के पास आये तथा सनंध में जो श्री राज जी महाराज का हुकम हुआ था, उसे पढ़कर सुनाया ।

हुआ हुकम हक का, सेख बदल ऊपर ।
जाओ तुम सुलतान पे, देओ खुस खबर ॥३५॥

सबसे पहले श्री जी ने शेखबदल को हुकम दिया कि तुम औरंगजेब को जाकर सनन्ध ग्रन्थ और ईमाम मेंहदी की पहचान की सब बातों की हकीकत बताओ ।

सेख बदल बिदा हुये, चले तरफ सुलतान ।
सनंधे सिर पर बांध, ले दिल में ईमान ॥३६॥

शेख बदल हुक्म मिलते ही सनंधें सिर पर बांध कर पूरे ईमान के साथ दिल्ली के लिए विदा हुए ।

Nijanand App

पहुंचे दिल्ली सहर में, बखत जुमें निमाज ।
ईदगाह चला गया, मैं पैगाम पहुंचाऊं ताए आज ॥३७॥

शेखबदल जब दिल्ली पहुंचे तब जुम्मे का (शुक्र वार) दिन था और नमाज का वक्त हो रहा था । वे सीधे ईदगाह ही चले गये कि आज मैं औरंगजेब को पैगाम दे दूंगा ।

तहाँ खलक टाढ़ी रहे, चित्त न काहू एक टौर ।
सेख बहुत पुकारिया, देखा दज्जाल का बड़ा जोर ॥३८॥

ईदगाह में हजारों की संख्या में लोग थे, किसी का भी चित्त एक तरफ नहीं था, वे भिन्न-भिन्न तरह की बातें कर रहे थे । शेख बदल ने चिल्ला-चिल्ला कर तो बहुत कहा परन्तु शरीयत का राज्य होने के कारण किसी ने भी उस पर ध्यान नहीं दिया ।

कोई कहे हिन्दवी मिनें, लिखे एह कलाम ।
बातां तो बरहक हैं, पर हमें रवा नहीं इस टाम ॥३९॥

किसी-किसी ने यदि शेख बदल की बातों को सुना भी तो यह कहा कि बातें तो आपकी बिल्कुल सच्ची हैं किन्तु सनंधे हिन्दी भाषा में होने के कारण हमें स्वीकार नहीं हैं क्योंकि शरीयत हमें इजाजत नहीं देती ।

इन भाँत बातें सुनके, फेर आये अपनें टौर ।
गनीबेग की हवेली में, जाए पहुंचे और ॥४०॥

उनकी इस प्रकार की बातें सुनकर शेखबदल अपने घर आ गए और फिर वहां से गनीबेग की हवेली में जा पहुंचे ।

तहाँ सनंधें बाँचन लगे, बिना एक महम्मद ।
तब एक सैयद बोलिया, बात जेहेल की लिए जिद ॥४१॥

वहां जाकर ''बिना एक महंमद की'' सनंध को पढ़ने लगे जिसमें यह लिखा है कि महंमद साहब के बिना और कोई पैगम्बर हुआ ही नही । तब वहां एक सैयद बोल उठा कि है शेखबदल तुम जाहिलपने की बातें करते हो, पैगम्बर तो एक लाख बीस हजार हुए हैं ।

क्यों कुफर बोलत हो, है एक महम्मद अलेहु सलाम ।
एते पैगम्बर भये, तिन काहू नाहीं नाम ॥४२॥

तुम तुफर की बात क्यों करते हो कि केवल एक महंमद ही पैगम्बर हुए हैं । इतने हजारों पैगम्बर हो गये हैं उनमें से किसी का भी नाम क्यों नही हैं ।

Nijanand App

प्रमाण : औलिए अंबिए फिरस्ते, जेता कोई पेद ।
पर अलहा किन्हूं न लहया, बिना एक महंमद ॥

(सनंध २८/२१)

कई वली पैगम्बर आदम, ए कहावें सब मुरसद ।
और मुरसद कोई न हुआ, बिना एक महंमद ॥

(सनंध २८/२०)

तब सेख बदल सों, झगड़ा हुआ इत ।
उत से पीछे फिरके, घरों आये तित ॥४३॥

इस बात पर उस सैयद का शेखबदल से झगड़ा हो गया, तब शेखबदल जी वहां से फिर अपने घर आ गए ।

दिन दोए चार में, अनूप सहर से आये श्री राज ।
बुलाया सेख बदल को, पूछा पैगाम का काज ॥४४॥

आप श्री जी दो-चार दिन अनूपशहर रहने के पश्चात् दिल्ली आ गए । दिल्ली पहुंच कर उन्होंने शेखबदल को बुलवाया तथा पैगाम का समाचार पूछा ।

तब सेख बदल ने, अपनी कही बीतक ।
मैं तो बहुत पुकारिया, इनों पीठ दई तरफ हक ॥४५॥

तब शेखबदल ने अपनी बितक कह सुनाई कि हे धनी ! मैंने तो ईदगाह जाकर चिल्ला-चिल्लाकर कहा परन्तु चौदह तबक को चाहने वाले इस मुरदार दुनियां के लोग जिन्होंने अल्ला ताला को पीठ दे रखी है उन्होंने एक शब्द भी नहीं सुना ।

कोई कलाम हिन्दवी का, ल्यावत है दिल सक ।
काहू दिल में कुफर, कोई बात कहे बुजरक ॥४६॥

कोई हिन्दी भाषा में होने के कारण दिल में शक लाते थे । कईयों के दिल में वैसे ही कुफ्र था । कईयों ने यह भी कहा कि ये बातें तो बड़ी महत्वपूर्ण हैं ।

फेर बैठे विचार को, इन बातां सुनी न कान ।
लाल गोवरधन मिल के, जाए कहो सेख सलेमान ॥४७॥

शेखबदल की ये बातें सुनकर श्री जी ने फिर दिल में विचार किया और श्री लालदास जी तथा गोवर्धन दास जी को हुकम दिया कि तुम दोनों जाकर शेख सुलेमान को ईमाम मेंहदी साहब के आने की हकीकत समझाओ ।

Nijanand App

तब फेर उत गये, जाए के किया मिलाप।
सारी हकीकत कही, जाके सुने मिटे सब ताप ॥४८॥

दोनों मिलकर शेख सुलेमान के पास गये तथा ईमाम मेंहदी साहब के आने की सारी हकीकत कह सुनाई जिससे सबके संशय मिट जाएं।

आज मिलाऊं कल मिलाऊं, यों फिरते मास भये दोए।
कबहूं कछु कबहूं कछु, जवाब करत हैं सोए ॥४९॥

शेख सुलेमान ने सारी हकीकत को सुना और विश्वास भी हो गया परन्तु दिल में ईमान न होने के कारण से इन्कार भी नहीं कर सका और कहने लगा कि आज मिलाऊंगा, कल मिलाऊंगा। इस प्रकार, कहते-कहते दो महीने बीत गए। कभी कुछ कहता था, कभी कुछ कहता था। इस प्रक़ार हमेशा बहाने ही बनाता रहता था।

कहे पहिले तो इन भेष सों, मिलत नहीं सुलतान।
भेष तुम्हारा बदलो, तो सुलतान सुनाऊं कान ॥५०॥

तब श्री लालदास जी और गोवर्धन दास जी ने उनसे पूछा कि तुम काम करना चाहते हो कि नहीं, स्पष्ट उत्तर दो। तब उसने कहा कि सच पूछो तो औरंगजेब हिन्दुओं के भेष में किसी से मिलता ही नही है। पहले तुम अपना भेष बदलो फिर मैं तुम्हें औरंगजेब से मिलाऊंगा तथा सारी हकीकत उसे कह सुनाऊंगा।

यों करते विचारते, कछु न देखी साख।
तब आपस में कह्या, अब फिरो इन से आप ॥५१॥

श्री लालदास जी तथा गोवर्धन दास जी ने विचार किया कि इसकी बात में कुछ भी हकीकत नहीं है, दम नहीं है। तब उसके पश्चात् जाना छोड़ दिया।

लाल दरवाजा छोड़ के, आए सराए रोहिलाखान।
ए कलाम पारसी में करें, तब होवे पहिचान ॥५२॥

तब लाल दरवाजा छोड़कर श्री जी रोहिल्ला खान की सराय में आ गए। तब श्री जी ने सोचा कि जब इस हिन्दी भाषा को फारसी भाषा में बदलेंगे, तब औरंगजेब को पहचान होगी।

तब एक मुल्ला पारसी का, हुकम हुआ दयाराम।
बुलाय ल्याओ तिनको, लिखे पारसी में कलाम ॥५३॥

तब एक मुल्ला जो फारसी कलाम को जानने वाला हो, उसे लाने के लिए दयाराम जी को हुक्म हुआ।

Nijanand App

तब लड़के काइम को, बुलाय ल्याया दयाराम ।
राखा चाकर दे महिना, वास्ते लिखने इन काम ॥५४॥

तब दयाराम श्री जी की आज्ञा के अनुसार काइम लड़के को, जो फारसी का आलम फाजल (विद्वान) था, नौकरी के लिये ले आया ।

सेखजी मीराजीय का, लिखया इत संवाद ।
तिन में सारी हकीकत, लिखी जो बुनियाद ॥५५॥

तब शेखजी-मीरा के संवाद का प्रसंग फारसी भाषा में लिखवाया गया, जिसमें शेखजी मीरा तक कैसे पहुंचते हैं । जिसमें हमारी सब हकीकत है ।

इनकी जिल्दें बांध के, रूक्के किये तैयार ।
ठौर ठौर पहुंचाये, जो थे सुलतान के यार ॥५६॥

शेख जी-मीरा के उस किस्से के पत्र तैयार किये गये तथा जो सुल्तान के यार थे, उन तक जुदा-जुदा पहुंचाये गये ।

पुकार करी घर घर, सब देखे मुरदार ।
राह खुदाइ के वास्ते, कोई न हुआ खबरदार ॥५७॥

इस बात का मुसलमानों के घर-घर में जिक्र होने लगा परन्तु खुदा की राह के वास्ते कोई भी तैयार नही हुआ ।

उस्ताद सुलतान का, ए जो सेख निजाम ।
कोई दिन इनके इहां फिरे, ना लायक देखा इसलाम ॥५८॥

शेख निजाम, जो बादशाह का उस्ताद था उसके घर जवाब के लिये कई दिन तक जाते रहे । वह भी केवल कुर्सी का ही उस्ताद था । कुरान की हकीकत के बारे में उसमें कुछ भी योग्यता नही थी ।

एक सौदागर सूरत का, रहे चांदनी चौक में ।
तिन पाया दीदार राज का, मिलाप था तिन सें ॥५९॥

सूरत का रहने वाला एक सौदागर चांदनी चौक में रहता था । वह स्वामी जी का दर्शन कर चुका था तथा सुन्दरसाथ भी उन्हें पहचानते थे ।

तिन ने कह्या मेरे पास, है दज्जाल नामा ।
तुमको मैं दिखाऊंगा, दज्जाल की सामा ॥६०॥

उसने कहा कि मेरे पास ''दज्जाल नामा'' है । उसे मैं आपको दिखाऊंगा । उसमें दज्जाल की हकीकत लिखी है ।

Nijanand App

सो लेने के वास्ते, लाल जाए बेर एक ।
वह नित वायदा करे, बातें करे अनेक ॥६१॥

श्री लालदास जी उस "दज्जाल नामा" को लेने के लिये एक बार अवश्य उस सौदागर के पास जाते रहे । वह सौदागर कई प्रकार की बातें करता रहा तथा देने का वायदा करता रहा ।

केतेक दिन फिराया, तब भया मुनकर ।
मेरे तपसीर है हुसैनी, जो बड़ी मातबर ॥६२॥

कुछ दिन श्री लालदास जी उसके घर फिरते रहे । आखिर में वह मुनकर हो गया और कहने लगा कि मेरे पास "तफसीरे हुसैनी" है जो इस्लाम धर्म में सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक है ।

तब पूछा लालदास नें, उन में क्या खबर ।
कुरान अरथ पारसी, है जाहिर सब ऊपर ॥६३॥

तब श्री लालदास जी ने पूछा कि उसमें क्या हकीकत है । तब सौदागर ने उत्तर दिया कि तफसीरे हुसैनी में कुरान का अर्थ फारसी भाषा में लिखा है । सब मुसलमान इसी को महत्व देते हैं क्योंकि इसका टीका हुसैन साहब ने किया था ।

ए बात लाल ने आए के, आगे करी श्री राज ।
हुकम हुआ लाल को, ले आओ तुम आज ॥६४॥

श्री लालदास जी ने तफसीरे हुसैनी के बारे में श्री जी के सामने आकर जिक्र किया तो श्री जी ने हुकम दिया कि जाओ, उसे आज ही ले आओ ।

लाल फेर उनके घर गये, फिरते भए दिन चार ।
फेर लालें आए के कह्या, याको झूठो लगत विचार ॥६५॥

श्री लालदास जी फिर उस सौदागर के घर गए तथा चार दिन तक चक्कर काटते रहे । जब उसने तफसीरे हुसैनी भी नही दी तो श्री लालदास जी ने स्वामी जी से आकर कहा कि यह व्यक्ति बिलकुल झूठा लगता है ।

उस बखत में हाजिर, बैठा था दयाराम ।
तिनने अरज करी, मुझे कहो ए काम ॥६६॥

उस समय दयाराम जी पास बैटे थे । सुनते ही श्री जी से अर्ज की कि इस कार्य को आपके हुकम से मैं करूंगा ।

Nijanand App

तब श्री राजें हुकम किया, तुम ल्याओ हुसैनी तपसीर ।
बड़ी चाह है हम को, पहुंचे मजल मीर ॥६७॥

तब श्री जी ने दयाराम जी को हुकम दिया कि दयाराम, उसे शीघ्र ले आओ । मुझे इसकी बड़ी चाहना है । उसमें जो शेखजी और मीरा का संवाद आया है, उसके अनुसार हम औरंगजेब तक पैगाम पहुंचाना चाहते हैं ।

तब हुकम श्री राज का, सिर चढ़ाया दयाराम ।
अपने अस्नाओं रहत थे, तिनसों कहा ए काम ॥६८॥

तब श्री जी की आज्ञा के अनुसार दयाराम अपनी दुकान पर आये । उनके पड़ौस में मुसलमान लोग रहते थे । उनसे उन्होंने यह काम कहा ।

हमारे अस्नाओं ने, पाती लिखी हम पर ।
हुसैनी मँगाई है, बहुत निहोरा कर ॥६९॥

दयाराम जी ने अपने पड़ोसी मुसलमान से कहा कि मेरे एक व्यापारी ने मुझ पर ये चिट्‌ठी बहुत प्रार्थना करके लिखी है, जिसमें तफसीरे हुसैनी मंगाई है और कहा है कि आपका बहुत बड़ा उपकार होगा ।

तब उनने कह्या, मैं करों तुम्हारा काम ।
तबहीं सुन हाजिर करी, दई हाथ दयाराम ॥७०॥

उस पड़ोसी मुसलमान ने एक दूसरे मुसलमान की चिट्‌ठी पढ़कर कहा कि तुम्हारा यह काम मैं अभी कर देता हूं । तब उसने तुरन्त तफसीरे हुसैनी लाकर दयाराम जी को दे दी ।

लिये चालीस रूपया, तिनमें दिए दो फेर ।
खुसाल हुआ दयाराम, जाए लगा सिर मेर ॥७१॥

उसने ४० रूपये लिये और दो रूपये दयाराम जी को लौटाकर वापस कर दिये । दयाराम जी ने जैसे ही तफसीरे हुसैनी को लिया तो उनकी प्रसन्नता की सीमा न रही ।

वहाँ से लेकर धाया, आये पहुंचा पास श्री राज ।
ले तपसीर आगे धरी, ऐ हुआ सिध काज ॥७२॥

तफसीरे हुसैनी को लेकर दयाराम जी चल पड़ें और श्री जी के चरणों में पंहुचे । तफसीरे हुसैनी को वहां रखते हुए उन्होंने कहा कि आपकी कृपा से ये काम हो गया है ।

Nijanand App

तपसीर को देख के, श्री राज भये खुसाल ।
बातें लगे करनें, आगे गुलाम लाल ॥७३॥

तफसीरे हुसैनी को देखकर श्री जी बहुत प्रसन्न हुए तथा श्री लालदास जी को बुलाकर सब हकीकत कही ।

इन समय कायम के, तपसीर दई आगे ।
देख इनके मायनें, हमको सुनाओ ऐ ॥७४॥

तब काइम मुल्ला को बुलाकर तफसीरे हुसैनी दी और कहा कि इसके माएने पढ़ो और हमें सुनाओ।

प्रथम इन्ना इन्जुलना सूरत इन पढ़ी, जामें तीन तकरार ।
इसारतें सारी खुलीं, जो लिखीं परवरदिगार ॥७५॥

सबसे पहले ''इन्ना इन्जुलना'' सूरत जो तीसवें सिपारे में है, उसमें लैल तुल कद्र के तीन तकरार का वर्णन आता है और अल्लाह तआला ने जो तीसरे तकरार के बारे में खुद लिखवाया था कि रूहें कैसे उतरेंगी तथा उन पर कैसे खैर उतरेगी । इससे सारे गुझ भेद खुल गये ।

हम ही थे ब्रज रास में, हम तीसरे आये इत ।
ऐ तो वही बात है, जो हम को कही तित ॥७६॥

तब स्वामी जी ने कहा कि हम ही ब्रज, रास में आये थे तथा तीसरी बार हम ही आये हैं । यह तो बहुत बड़ी महत्व की बात है जो श्री देवचन्द्र जी ने नवतनपुरी में कही थी कि कुरान में अपनी सब हकीकत है ।

इन्ना आतेना सूरत, पढ़ी मुल्ला ने जब ।
जमुना ताल पाल की, हकीकत पाई तब ॥७७॥

जब काइम मुल्ला ने ''इन्ना आतेना'' सूरत को पढ़ा तब हौज कौसर, ताल की पाल तथा श्री जमुना जी की हकीकत का पता चल गया ।

जब चोट लगी श्री राज को, आया ऐसा हाल ।
ना रही उठने की ताकत, हुये अत खुसाल ॥७८॥

श्री जमुना जी तथा हौज कौसर ताल का वर्णन सुनकर श्री जी के दिल में ऐसा दर्द हुआ कि हमारे घर की सब बातें हैं लेकिन हमें पता नही है । तब परमधाम के ज्ञान की मस्ती में ऐसे विभोर हो गये कि वे सुनते ही रहे तथा एक-एक शब्द को सुनकर खुशहाल हो गये ।

Nijanand App

तीन रोज लग सेज से, उठ ना सके तब ।
सुने सुकन तपसीर में, कलाम रब्बानी जब ॥७९॥

श्री जी तीन दिन लगातार सेज्या से उठे नही तथा तफसीरे हुसैनी जिसमें अल्लाह तआला की वाणी है, उसे सुनकर ही उठे ।

साथ आगे बैठ के, चरचा करी बनाए ।
हुई खुसाली साथ में, लई साखें मिलाए ॥८०॥

तब श्री जी ने सब सुन्दरसाथ के आगे तफसीरे हुसैनी में लिखी बातों की खूब चर्चा की और समझाया। तब सुन्दरसाथ भी बहुत खुश हुए तथा उन सभी गवाहियों को मिला कर देखा ।

एह खुसाली अपनी, पहुंचाई सब साथ ।
एह तो मोमिनों वारसी, जाके हकें पकड़े हाथ ॥८१॥

इस बात की खुशखबरी जगह-जगह सुन्दरसाथ को दे दी गई कि कुरान और तफसीरे हुसैनी अपनी किताबें हैं । श्री राज जी महाराज ने जिन मोमिनों पर मेहर की है अर्थात् जिन्होंने श्री प्राणनाथ जी को विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार तथा ईमाम मेंहदी के रूप में पहचान लिया है वे ही इस किताब के वारिस हो सकते हैं ।

पाती लिखी उदयपुर को, और साथ सबन ।
तुम टौर टौर पहुंचाइयो, जो कोई साथ सैयन ॥८२॥

तफसीरे हुसैनी की हकीकत की बात उदयपुर में मुकुन्द दास एवं भीमभाई को लिखी तथा जगह-जगह सब सुन्दरसाथ को यह भी लिख दिया कि जहां-जहां भी अपने सुन्दरसाथ रहते हैं उनको यह सूचना दे देना ।

सुनियो भीम मुकुन्द जी, उद्धव केसव स्याम ।
हम पाती पढ़ी महम्मद की, सब पाई हकीकत धाम ॥८३॥

भीम भाई एवं मुकुन्द दास को उदयपुर में, उद्धव टाकुर को जामनगर में, केशवदास जी को सिद्धपुर पाटन में और श्याम भाई को सूरत में पातियां लिखी कि हमने महंमद के लाये हुए कुरान को पढ़ा है, जिसमें सारी हकीकत परमधाम की है ।

अपने घर की इसारतें, और न समझे कोए ।
और कोई तो समझें, जो कोई दूसरा होए ॥८४॥

कुरान में हमारे ही परमधाम की सब बातें लिखी है जिसे हमारे सिवाय अन्य कोई समझ नहीं सकता। यदि कोई और हमारे घर का होता तभी तो वह इसके भेद समझता । इस कारण से मुसलमान आज दिन तक कुरान की हकीकत को नहीं समझ सके ।

Nijanand App

इन भाँत की पातियां, पहुंचाई सब साथ ।
खुसाली तिनको दीजियो, जो लड़त दज्जाल सों बाथ ॥८५॥

इस तरह की चिट्ठियां जगह-जगह पर सब सुन्दरसाथ को पहुंचाई गई तथा पाती में यह भी लिखा कि इस पाती को जो सुन्दरसाथ पढ़े, वह उन सुन्दरसाथ को बधाई लिखे जो मेरे साथ औरंगजेब को पैगाम पहुंचाने में लगे हैं और शरीयत के मुसलमान जो दज्जाल का रूप धारण किए बैठे हैं उनसे लड़ने के लिये तैयार हैं ।

इन समय नवतन पुरी से, आए पहुंचे प्रेमदास ।
नागजी संगजी सामिल, आये प्रमोधनें की आस ॥८६॥

ऐसे समय में नवतनपुरी से प्रेमदास, नागजी और संगजी, ये तीनों मिलकर दिल्ली के सुन्दरसाथ, जो श्री जी के चरणों में थे, उन्हें श्री देवचन्द्र जी की गादी के प्रति दिल में पुनः भाव ला करके समझाने के लिए आए थे ।

ए आये दिल्ली मिने, सराए हवेली रोहिल्ला खान ।
एक दावा ले बैटे ईसे का, इनका तिन पर था ईमान ॥८७॥

ये तीनों मिल कर सराय रोहिल्ला खान, जहां सुन्दरसाथ रहते थे, आ पहुंचे और श्री देवचन्द्र जी महाराज का ही दावा करने लगे कि हमको श्री देवचन्द्र जी को छोड़कर अन्य किसी पर विश्वास नहीं करना चाहिए। उनकी मूल गादी पर जो बैठे हैं, वे ही हमारे धाम धनी हैं ।

थे गिरोह यहूदन में, इनों था मसनन्द का काम ।
अकस राखते दीन से, जो बरहक इसलाम ॥८८॥

बिहारी जी के भेजे हुए उनके अनुयायी ये तीनों साथी उसी तरह से दिल्ली के सुन्दरसाथ का विरोध करने लगे जिस प्रकार महंमद साहब के समय में यहूदी लोग जो आग, पानी, पत्थर की पूजा करते थे और महंमद साहब से विरोध रखते थे, उसी प्रकार इनको ये ज्ञान नहीं था कि स्वामी जी के अन्दर ही साक्षात् श्री देवचन्द्र जी विराजमान हैं और श्री जी ही श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार और आखरूल जमां इमाम मेंहदी हैं । इसलिये तफसीरे हुसैनी की चर्चा को सुनकर वे उन सुन्दरसाथ का विरोध करने लगे जो हकीकत में श्री निजानन्द सम्प्रदाय पर चलने वाले थे ।

रसूल साहिब की बात को, कबहू न सुने कान ।
खुदा एक महम्मद बरहक, तापर ना ल्यावें ईमान ॥८९॥

और यहां पर तो केवल रसूल साहब की ही चर्चा हो रही थी जिसे आज दिन तक कभी नही सुना था । खुदा एक है और महम्मद बरहक है (जिस प्रकार पारब्रह्म महान सत्य है, उसी प्रकार मुहम्मद साहब भी सत्य हैं), इस पर ये कभी भी विश्वास ला ही नहीं सकते थे ।

Nijanand App

ए आये मजलिस मोमिनों की, इहाँ बिना महम्मद और न बात ।
ए देख ताज्जुब भये, बड़ी चरचा हुई खुदा की जात ।।९०।।

जब इन्होंने मोमिनों की मजलिस में आकर श्री जी के मुख से महंमद साहब और कुरान के द्वारा परमधाम, धनी देवचन्द्र जी और श्री प्राणनाथ जी की साहेबी की बातें तथा श्री कृष्ण और महंमद एक हैं, की चर्चा विस्तार से सुनी तो इन्हें बहुत हैरानी हुई ।

जब रूबरू भये राज सों, तब बातें करी मिने जोस ।
आप आड़े कछु न देखहीं, इलम था फरामोस ।।९१।।

जब चर्चा सुनने के पश्चात् ये तीनों श्री जी के सामने आकर बैठे तो बड़े जोश में आकर कहने लगे कि हम सब सुन्दरसाथ श्री देवचन्द्र जी महाराज के ही अंग हैं । हमें उनकी मूल गादी पर विराजमान बिहारी जी को ही धाम का धनी मानना चाहिए । इन्होंने श्री जी को श्री देवचन्द्र जी का शिष्य ही समझा और श्री जी के स्वरूप की पहचान इन्हें नही थी कि ये ही श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार और आखरूल जमां इमाम मेंहदी हैं । इनके अन्दर ही श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्र जी) और श्री राज जी पूर्ण शक्तियों के साथ विराजमान हैं । इसलिये हमसे बड़ा और कोई नही है यह समझकर जोश में बोलने लगे क्योंकि इनको हकीकत के ज्ञान की पहचान नहीं थी ।

जब चरचा करी हजूर नें, दई श्री देवचन्द्र जी की पहिचान ।
श्री महम्मद साहिब का, रोसन किया ईमान ।।९२।।

जब आप श्री जी ने उनको चर्चा सुनायी और साक्षात् श्री देवचन्द्र जी महाराज कहां पर विराजमान हैं, इसकी पूरी पहचान कराई और श्री राजजी महाराज ही खुद रसूल बन कर आये थे और कुरान में ईसा रूह अल्लाह दो जामें पहन कर काम करेंगे, ऐसा लिखा है । पहला जामा ईसा रूह अल्लाह (देवचन्द्र जी) का है । दूसरा जामा (तन) श्री मेहराज जी का ही है । इसी तन में श्री देवचन्द्र जी और श्री राजजी साक्षात् विराजमान हैं तो उन तीनों को भी महंमद साहब पर ईमान हो गया तथा श्री देवचन्द्र जी की पहचान हो गयी ।

जो बात कही महम्मद नें, सोई रूह अल्ला कलाम ।
मिला दिखाये दोनों इनों को, ए हुआ दीन एक इसलाम ।।९३।।

जो महंमद साहब ने कलमें में कहा है वही श्री देवचन्द्र जी महाराज ने तारतम में कहा है अर्थात् जो ला, इलाह और अल्लाह हैं वही क्षर, अक्षर और अक्षरातीत हैं । दोनों को मिला कर एक बताया और समझाया कि जो दीने इस्लाम है वही श्री निजानन्द सम्प्रदाय है । दोनों एक ही हैं, केवल भाषा का अन्तर है ।

Nijanand App

प्रमाण : भेष भाषा जिन रचो, रचियो माएने असल ।
भई रोसन जोत रसूल की, अब खुले माएने सकल ॥

(सनंध ३/१)

जब ईसा महम्मद मिल गये, कलमा और तारतम ।
भागा दिल का कुफर, जाग देखी आतम ॥९४॥

जब श्री जी ने धनी श्री देवचन्द्र जी और महंमद साहब को मिला कर एक करके समझा दिया तथा तारतम एवं कलमें को एक करके बताया तो उनके दिल का जो कुफर था वह मिट गया। उनकी आतम जागृत हो गई तथा उन्हें यह पूरी पहचान हो गई कि श्री राजजी और श्यामा जी 'श्री जी' के अन्दर विराजमान हैं ।

कहे सुकन जब राज नें, बड़ा देख्या जोस ।
तब दीन यहूदन का, सब हुआ फरामोस ॥९५॥

श्री जी ने पूरे जोश-आवेश में जब चर्चा सुनाई तो उन्हें समझ आ गई कि गादी पूजा जिसे हम महान समझ बैठे हैं, वह तो केवल यमपुरी का साधन है इसलिए बिहारी जी और गादी का भाव छोड़कर श्री जी पर ईमान ले आये ।

प्रमाण : जनम अंध अमे जे हतां, ते तां तमे देखीता करया ।
वांसो वछूटो हाथ थी, जमपुरी जातां वली कर ग्रहया ॥

(प्रकाश गुजराती १०/३)

अर्थात् हे धाम के धनी ! हम अज्ञानी थे तो आपने जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर हमारी अज्ञानता को (अनजानेपन को) हटाया। हमने आपका पीछा छोड़ दिया था। दूसरे जीवों की तरह गादी पूजा और कर्मकाण्ड जो यमपुरी जाने का ही साधन है, उसमें भटक गये थे। तब आपने अति कृपा करके हाथ पकड़ कर खींच लिया और अपने चरणों में लगा लिया।

तब अपनी जुबान सों, बातें कही ईमान ।
हम श्री देवचन्द्र जी को इत देखें, भई हमको पहिचान ॥९६॥

इस प्रकार उन तीनों ने पूरा यकीन लाकर अपनी जुबान से कहा कि हे श्री जी ! हमें पहचान हो गई है। साक्षात् श्री देवचन्द्र जी आपके अन्दर विराजमान हैं। इसमें कोई भी संशय नहीं है। अब हम उस गादी से कोई सम्बन्ध नही रखेंगे ।

Nijanand App

खुदा एक महम्मद बरहक, हमको रही न सक ।
सुनाई सनंध कलस की, ए तो है माफक ॥९७॥

खुदा एक है तथा महंमद साहब बरहक हैं इसमें हमें कोई संशय नहीं है । तब श्री जी ने उनको सनंध ग्रन्थ में से जब ''बिना एक महंमद की'' ''अबसो कहां हैं महंमद'' सनंध को सुनाया तो उन तीनों ने यह स्वीकार किया कि यह वाणी बिल्कुल सत्य है ।

हम तो तहकीक किया, तुम हो बीच इसलाम ।
तुम्हारी किताब का, हम लिख पावें कलाम ॥९८॥

आज हमने यह निश्चय कर लिया है कि आप ही सतगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी की राह पर जागनी का कार्य अर्थात् श्री निजानन्द सम्प्रदाय का सच्चा प्रचार कर रहे हैं । हे धनी ! हमारे ऊपर इतनी कृपा कीजिए कि हम भी इस ज्ञान को लेकर प्रचार करें ।

हम भी सब साथ को, लिखेंगे सुकन ।
हम अब लों भूले थे, है इत बात मोमिन ॥९९॥

हम भी अपनी कलम से नवतनपुरी के मानने वाले सुन्दरसाथ को लिखकर यह बात भेजेंगे कि हम सब भूले हुए थे कि श्री देवचन्द्र जी की शक्ति गादी पर विराजमान बिहारी जी के अंदर है ।

श्री धनी देवचन्द्र जी को, हम देखा है इत ।
तुम ईमान ल्याईयो, जो कोई होवे जित ॥१००॥

हमने साक्षात् श्री देवचन्द्र जी, श्री जी के अन्दर विराजमान हैं, ऐसी पहचान की है और आप सब जहां पर भी हैं, गादी पूजा को छोड़कर श्री जी पर ईमान लाइये ।

इन भाँत सब साथ को, पाती लिखी बनाये ।
सो पाती सब ठौरों को, दई सबों पहुंचाय ॥१०१॥

इस प्रकार श्री जी की पहचान की पातियां उन तीनों ने लिखकर सब जगह भेज दी ।

सेख बदल और नाग जीं, एक टौर किये जब ।
संग जी सामिल होय के, ताम खिलाया तब ॥१०२॥

पूरी पहचान होने के पश्चात् नाग जी और संग जी ने शेख बदल के साथ मिलकर भोजन किया ।

Nijanand App

कुफर सारा दिल का, भाग गयी सब सक ।
एक दीन होए मिले, ल्याये ईमान ऊपर हक ॥१०३॥

उनके दिल में जितना कुफ्र था, वह मिट गया । सुन्दरसाथ, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, उसके प्रति कोई सन्देह नही रहा । वे इस तरह का ईमान श्री जी पर लाये तथा श्री निजानन्द सम्प्रदाय के रूप में सभी मिल गये ।

इन भाँत बाईस दिन, रहे सोहबत में ।
प्रेमदास ने देखिया, बात इन किस्से सें ॥१०४॥

इस प्रकार ये तीनों श्री जी के चरणों में २२ दिन तक रहे परन्तु प्रेमदास जी ने देखा कि नाग जी और संग जी का ईमान कुछ विचलित हो गया है अर्थात् दिल में बेईमानी आ गयी है और बनावटी भाव दिखा रहे हैं ।

कहया प्रेमदास नें, हम सों बातें करते और ।
रूबरू में देखिया, ईमान ल्याये इस ठौर ॥१०५॥

प्रेमदास जी ने कहा कि तुम जब मुझसे मिलते हो तो उस समय तुम्हारी बातों से यह सिद्ध होता है कि तुम्हें श्री जी पर विश्वास नहीं है । जब उनके सामने आते हो तो पक्के ईमान वाले मोमिनों जैसी बातें करते हो ।

प्रेमदास रह गया, ए दोऊ चले अपने मुकाम ।
जिन बात को आये थे, सो कर चले काम ॥१०६॥

प्रेमदास जी को पक्का ईमान होने के कारण से वह श्री जी के ही चरणों में रह गये तथा ये दोनों वापस नवतनपुरी चलने को तैयार हुए क्योंकि श्री जी और सुन्दरसाथ को प्रमोध कर कुछ धन लेने की इच्छा से आये थे । श्री जी की उन्होंने पूरी पहचान तो कर ली किन्तु बिहारी जी का प्रभाव किसी पर नही डाल सके । श्री जी ने चलते समय उनको बहुत सारा धन सेवा के लिये दिया । जिस काम के लिए ये आये थे उसे पूरा करके नवतनपुरी के लिये रवाना हुए ।

जब इत से पीठ दई, तब घेरे सैतान ।
बसबसा करने लगा, छीन लिया ईमान ॥१०७॥

जैसे ही उन्होंने दिल्ली को छोड़ा तो दज्जाल ने उन्हें घेर लिया और मुनकरी के कारण श्री जी के प्रति जो ईमान था, वह खत्म हो गया ।

Nijanand App

साथ में जहां मिले, तहां बातें दुदिली करें।
सब कोई लगे पूछनें, तुम काहे जात फिरे ॥१०८॥

जहां तहां रास्ते में सुन्दरसाथ, जिन्हें अपने ईमान की चिट्ठियां लिखी थी, जब उनसे दोगली बातें करने लगे अर्थात् फिर बिहारी जी की महिमा गाने लगे तो उन सब सुन्दरसाथ ने कहा कि तुमने अपनी आंखों से श्री देवचन्द्र जी का दर्शन करके चिट्ठियां लिखीं थीं। अब अपने ईमान से मुनकरी क्यों कर रहे हो।

तिन से कछु बातें करें, कछु लगाय के सक।
श्री देवचन्द्र जी बिना, और न कोई हक ॥१०९॥

तब इन दोनों ने उनके सामने यही बात कही कि ठीक है पाती तो हमने ही लिखी थी परन्तु श्री निजानन्द सम्प्रदाय को चलाने वाले श्री देवचन्द्र जी हैं जिनकी गादी पर बिहारी जी बैठे हैं। हमें उनके सिवाय अन्य किसी को भी धाम धनी नही मानना चाहिए।

जब नवतनपुरी पहुंचे, अपने मित्र के पास।
तहां जाय के कह्या, बिन श्री देवचन्द्र जी न आस ॥११०॥

जब नवतनपुरी में अपने पूज्य बिहारी जी के पास पहुंचे तो वहां पर यही कहने लगे कि श्री देवचन्द्र जी के बिना हमारा और कोई भी धाम धनी नहीं हो सकता।

श्री देवचन्द्र जी को हम देखें, बैठे उन मुकाम।
एक दीन करन का, सौंप्या उनको काम ॥१११॥

परन्तु हे बिहारी जी ! हमने साक्षात् श्री देवचन्द्र जी महाराज को श्री जी के हृदय में विराजमान देखा है और श्री देवचन्द्र जी महाराज ने श्री जी को ही श्री निजानन्द सम्प्रदाय की जागनी का कार्य सौंपा है जो वे कर रहे हैं।

इतनी बात सुनके, उठ भागा मेहतर।
रहों न पास तुम्हारे, झगड़ा हुआ यों कर ॥११२॥

इतनी बात सुनते ही उनके मुखिया श्री बिहारी जी का उनसे वाद विवाद हो गया और बिहारी जी ने स्पष्ट कह दिया कि अब मैं कभी भी तुम्हारे पास नहीं रहूंगा। ऐसा कह कर उनसे रूष्ट होकर वे गादी छोड़ कर चले गये।

Nijanand App

ए सब मिल पीछे दौड़े, फिराये क्योंए न फिरे जे ।
कदमों लाग करें आजजी, बातें भूल के कही हम ऐ ॥११३॥

तब ये सुन्दरसाथ उनके पीछे-पीछे भागे जा रहे थे और यह कह रहे थे कि बिहारी जी महाराज ! आप ही हमारे धाम के धनी हैं । लौट आइये !लौट आइए! फिर कदमों लग कर अर्जी की कि आप क्यों नाराज हो रहे हैं । भूल से हमसे यदि यह बात निकल गई तो हमें क्षमा कर दीजिए ।

वे क्यों ऐ कर माने नही, जाए बैठे इक ठौर ।
समझाये समझे नही, बात न सुने और ॥११४॥

परन्तु कठोर स्वभाव होने के कारण बिहारी जी ने किसी की भी विनती स्वीकार नही की तथा जंगल में जाकर एक वृक्ष के नीचे बैठ गए । सब सुन्दर साथ ने अर्ज (विनती) की और हर प्रकार से समझाया परन्तु उन्होंने किसी की भी कोई बात स्वीकार नही की ।

तीन दिन तहां रहे, बात काहू न सुने कान ।
बड़ा दुख भया साथ में, सुनके बात ईमान ॥११५॥

बिहारी जी महाराज तीन दिन तक वहीं पर भूखे-प्यासे बैठे रहे और किसी की भी बात सुनी तक नहीं। उधर सुन्दरसाथ बिहारी जी के प्रति अपनी मुनकरी के कहे शब्दों पर पश्चाताप करने लगे कि हमने इनको ऐसे शब्द क्यों कह दिए ।

ऐ सब ज्यों त्यों करके, ल्याये अपनें घर ।
बातें जो इसलाम की, यों उठी दिल ऊपर ॥११६॥

सब सुन्दरसाथ जैसे तैसे करके बिहारी जी को किसी तरह मनाकर अपने घर ले आए । नाग जी और संग जी के दिल में जो श्री प्राणनाथ जी के प्रति ईमान की बातें थी, वह वहीं की वहीं दब कर रह गई।

फेर ठौर ठौर पाती लिखी, अपनें फिरे की ।
मत कोई ल्याइयो ईमान, तरफ श्री जी साहिब जी ॥११७॥

फिर दुबारा नाग जी और संग जी ने सब जगह चिट्ठियां लिखी कि हमने जो पहले पत्र लिखे थे, उसके अनुसार कोई भी अपने मन में श्री जी के प्रति ईमान (विश्वास) नही लाना । धनी श्री देवचन्द्र जी की मूल गादी नवतनपुरी में है जिस पर श्री बिहारी जी विराजमान हैं तथा वे ही हमारे धाम के धनी हैं ।

ए किस्सा इत का कह्या, जो आया बीच दरम्यान ।
अब कहों ए बीतक, जो लड़ाई सुलतान ॥११८॥

श्री जी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! जागनी का कार्य करते हुए यह एक प्रसंग आ गया था जिसे हमने कह सुनाया । अब सुलतान औरंगजेब के साथ होने वाले धर्मयुद्ध का वर्णन करता हूं ।

Nijanand App

महामत कहे सुनो साथ जी, जो तुम में बीतक ।
लिखी लोमोफूज में, तुम्हारे ताले हक ॥११९॥

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! जागनी के कार्य में तुमसे दज्जाल जो कुछ संघर्ष कर रहा है । इसे कुरान में पहले से ही श्री राज जी महाराज ने लिखवा कर महंमद साहब के हाथ से भिजवा दिया था इसलिये इसे अटल समझना ।

(प्रकरण ३९, चौपाई १९६६)

रोहिल्ला खान की सराय में, बैठ किया विचार ।
हमको अब क्या करना, हुकम परवरदिगार ॥१॥

रोहिल्ला खान की सराय में बैठकर श्री जी ने सब सुन्दर साथ के साथ विचार विमर्श किया कि अब श्री राजजी महाराज के हुकम से औरंगजेब के पास आखरूल जमां इमाम मेहंदी के आने का तथा कयामत के निशान जाहिर होने का पैगाम देकर उसकी आत्मा को जगाने के लिए हमें क्या करना चाहिए ।

घरों रजवी खान के, फिरे दिन दस बीस ।
चरचा बात रसूल की, उम्मेद नही जगदीस ॥२॥

रिजवी खान, जो औरंगजेब के दरबार का दीवान था, उसके पास श्री जी ने अपने मोमिनों को भेजा। जो १०-२० दिन तक बराबर जाकर ईमाम मेंहदी तथा महंमद साहब के आने की चर्चा सुनाते रहे ताकि दीवान के माध्यम से हमारी बातें औरंगजेब तक पहुंच जाए । माया का जीव होने के नाते से उससे कोई उम्मीद नहीं जगी कि यह राहे खुदा में कुछ काम करेगा ।

सेख निजाम के घरों, फिरत रहे मास एक ।
बातां को उतारनें, कह दिखाई अनेक ॥३॥

तब शेख निजाम, जो औरंगजेब बादशाह का उस्ताद (राजगुरू) था, उसके पास एक महीने तक अपना कर्तव्य पूरा करने के लिए जा कर कयामत के जाहिर होने के सम्बन्ध में कुरान के अनेकों प्रमाणों से समझाया लेकिन कोई भी सफलता प्राप्त नहीं हुई ।

इन बात के वास्ते, कछू बात सुने इसलाम ।
और आज उनको ए कही, दुनिया तरफ तमाम ॥४॥

उसके घर जाने का विशेष लक्ष्य यही था कि वह दीने इस्लाम के लक्ष्य के अनुसार कयामत एवं मोमिनों के जाहिर होने की बात सुन ले । जब उसने कुछ भी ध्यान नहीं दिया तो एक दिन मोमिनों ने स्पष्ट रूप से कह दिया कि आप सब दुनियां के ऐशो आराम में पड़े हैं, इसलिए आप धर्म की बात नहीं सुनते हैं।

Nijanand App